<u>मिसरी (मिश्री) की डली</u>

Mishri Ki Dali

***Class dt.* : 05-03-2020**
BK Dr. Sachin Bhai ji
Diamond Hall, Shantivan

ओम शांति। विदेश के एक लेखक ने अपनी जीवन कहानी लिखी है, जिसमें उसने लिखा- जब मैं युवा था और कॉलेज में था, एक दिन मैं कॉलेज से लौट रहा था, मेरे हाथ में बहुत सारी चीजें थी, दो स्वेटर थी, एक पैड थी, एक बैग थी, टेपरिकॉर्डर था एक, मोबाइल था, कुछ किताबें थी, और मैं टकराया और नीचे गिरा और मेरी सारी वस्तुएं नीचे गिर गई और मेरे पीछे से मेरे ही कॉलेज का एक लड़का आ रहा था और उसने मुझे मदद की, वो सब उठाने में। उसने मुझे अपना नाम पूछा, मैंने कहा मेरा नाम बिल है और उसका नाम मार्क था और हम दोनों का मार्ग एक ही था, रास्ते में ही घर था इसलिए मैं उसके घर गया और उससे बातें करने लगा। उसने मुझे अपने बारे में बहुत कुछ पूछा और मैंने उसको बताया भी कि मुझे खेल-कूद पसंद है, मुझे गेम्स (games) पसंद है, और मुझे कौन-कौन से सबजेक्ट (subject) पसंद नहीं है। कॉलेज अभी-अभी शरू हआ था। कुछ समय पहले मैं उसे जानता नहीं था, वो मझे नहीं जानता था। पर हमारी दोस्ती हो गई और उसने फिर कहा कि मेरे घर चलोगे और फिर मैं उसके घर गया, और फिर हम दोनों बैठे। फिर उसकी मां ने हमें कुछ खिलाया और लास्ट में मिश्री (Sugar Candy) दी और फिर बाद में कई बार हम मिले और हम साथ में ही रहे। साथ में पढे, ग्रेजुएशन साथ में किया और उसने कहा कि बहुत वर्ष बीत गये। फिर मिलना कम हुआ और एक दिन वो अचानक मिला और मैंने उससे पूछा। क्या तुमको याद हैं वो दिन? पहला दिन, जिस दिन तुम मुझे मिले थे। उसने कहा हां मुझे याद है। तुम्हारे हाथों में बहुत सारी चीजें थी, और तुमने मुझसे कहा था कि मैं थोड़ा दुःखी हूँ , ब्रेक-अप हुआ है। वो मार्क कहता था - हाँ, मुझे याद है। बिल उसको कहता है, पर तुम्हें एक बात पता नहीं, वो जो दिन था, मेरे जीवन का

सबसे दुःख वाला दिन था और मैं उस दिन आत्महत्या करने जा रहा था। वो सारी वस्तुयें मेरे घर की ली हुई थी और वो सारी वस्तुयें मैंने एकट्ठा कर ली थी क्योंकि यहाँ वहाँ वो चीजें पड़ी हुई थी, तो वो सारी मैंने ले ली थी, ताकि कहीं फैक दूँ और उसके बाद मर जाऊँ पर अचानक से तुम मिल गये और तुमने क्या किया? एक ही छोटा सा काम किया मेरे हाथों से जो चीजें गिरी थी, वो उठाने में तुमने मदद कर दी। बस ये इतनी सी बात तुमने कर दी, और मेरा जीवन बच गया। अगर तुम न आते, अगर तुमने वो चीजें नहीं उठायी होती जो मेरे हाथों से गिरी थी, मैं शायद उस दिन मर जाता।

हम भी शायद मर जाते यदि, यदि तुम न आते। बाबा का एक गीत है, उसी दम तेरा वो आना और बचाना न भूल पायेंगे। ओम शांति भवन में कई-कई वर्षों पहले भाई बहनों ने एक ड्रामा किया था, जिसमें एक बहन दिखाई थी, वो बहुत दुःखी है और अभी आत्महत्या करने जा रही है। फिर वहाँ से एक ब्रह्माकुमार आता है और उसको बचाता है, फिर वो गीत पीछे से बैकग्राउंड से बजता है। उसी दम तेरा वो आना बचाना न भूल पायेंगे। तो कल हमारी भगवान से मुलाकात होगी इसलिए अपने आपको तैयार करना है और तैयार करने की एक विधि आज हम सीखेंगे और वो है सबसे पहले पहले क्या हुआ? जैसे लौकिक में फर्स्ट्स (firsts) को याद किया जाता हैं। पहली मुलाकात, पहली बात, पहले-पहले साथ घूमना, सब कुछ पहला पहला याद किया जाता है। उसको कॉलेज के जीवन में कहा जाता है - फर्स्ट्स। फर्स्ट वेलेन्टाइन, फर्स्ट गिफ्ट, फर्स्ट फाइट, फर्स्ट ब्रेक अप, फर्स्ट पैच अप। सब फर्स्ट, फर्स्ट, फर्स्ट, फर्स्ट... होता है हर चीज। और ऐसा सब जब होता है, तब बड़ी खुशी रहती है। सातवें आसमान पर होता है व्यक्ति।

हवाएं भी गा रही हुआ कुछ तो मुझे
उड़ते रहें या फिर धीरे चलें, थामे मुझको कोई
हैं नई सी जमीं, हैं नया आसमां
हुई हुई शुरू कहानी नई, तेरी आँखों ने कह डाले राज सभी

हवाएं गुनगुनाएं, छूके तेरी हंसी
बैठे बैठे मुस्कुराने की वजह मिली

हवाएं भी गा रही हुआ कुछ तो मुझे
उड़ते रहें या फिर धीरे चलें, थामे मुझको कोई
हैं नई सी जमीं, हैं नया आसमां

सर्दियों में धूप सी है ये बातें तेरी
बातें फिर यादों में कटती रातें मेरी

तेरी बाते कैसी हैं? सर्दियों में धूप सी और धूप में तुम कौन है? छांव बनकर।

खिल सी खिल सी गई हर सुबह मेरी
खुलती खुलती जैसे **मिसरी की डली**

वो बिल, मार्क से कहता है, कि क्या तुम्हें याद है तुम्हारी माँ ने हमको क्या खिलाया था? मिसरी की डली (rock candy, sugar candy). तो मिसरी की डली अर्थात् बहुत बहुत मीठा, बहुत-बहुत मीठा अनुभव। भक्ति मार्ग में किसको पसंद है मिसरी की डली? कृष्ण को। माखन और मिसरी खिलाई जाती है और नीचे दक्षिण में कोई भी धूप, समर में विजिटर्स (visitors) आते हैं तो उनको मिसरी और पानी दिया जाता है। आज हम इसी पर चर्चा करेंगे। मिसरी की डली।

भगवान से प्यार बढ़ाने की विधि है याद। क्या याद करना? फर्स्ट, फर्स्ट, फर्स्ट । तो हमारे पास दो दिन है आज और कल। तो आज से याद करना शुरू करेंगे, सबसे पहला संपर्क (contact) जो हुआ था ब्रह्माकुमारीज का, उस दिन को याद करेंगे। जो सबसे पहला संपर्क हुआ था, सुना था किसी से वो दिन, वो समय, वो पल ।

1. पहला सेन्टर- सबसे पहली बार सेन्टर कब गये थे? वो दिन याद करेंगे वो समय याद करेंगे, याद आ रहा है? चाहे मम्मी ले गयी थी, या पप्पा ले गये थे। प्यार से लेकर गये थे, मार मार के लेकर गये थे, या खुद गये थे, या जबरदस्ती गये थे, निश्चय से गये थे या संपर्क से गये थे, परखने गये थे, टेस्ट करने गये थे या जिज्ञासा वश गये थे- है क्या ये? याद करेंगे, वो पहला संपर्क। वो पहली बार सेन्टर जाना, वो सबसे पहले ब्राह्मण परिवार से मिलना, उन बहनों से मिलना, उन भाईयों से मिलना, उन माताओं से मिलना या उनसे बात करना और पूछना, यहाँ करते क्या हो? वो मातायें जो नशे में थी, डायरी ले लेकर निकल रही थी सेन्टर से, हम जब पहुंचे तो। या जा रही थी या योग कर रही थी, जब हम दोपहर में गये थे तो, वहां पर बैठकर अकेले में, बाबा के कमरे में। तो याद करना वो पहला संपर्क, वो पहला सेन्टर जाना, वो पहली बार ब्राह्मण परिवार से मिलना। वो पहला कोर्स, पहली बार

कोर्स, पहली बार सुन रहे थे कि ये आत्मा है और ये परमात्मा है। और हम अंदर से सोच रहे थे - हमको पता है, ये हमको क्या सिखायेंगे या तो सोच रहे थे – अच्छा ! हमें तो पता ही नहीं था। या तो सोच रहे थे - पता नहीं ये क्या बता रहे हैं? या तो सोच रहे थे - पता नहीं यहां किसने भेज दिया? या तो सोच रहे थे - टाइम वेस्ट हो रहा है कहां फंस गये। भिन्न-भिन्न विचार, अलग-अलग विचार या फिर प्यास थी या फिर जन्म-जन्म की भूख (hunger) थी। इमोशनल हंगर (emotional hunger), इंटेलेक्चुअल हंगर (intellectual hunger), स्पिरिचुयल हंगर (spiritual hunger). फिजिकल हंगर (physical hunger) से बढकर ये तीन हंगर है। भूख थी, बौद्धिक भूख, भावनात्मक भूख, आध्यात्मिक भूख, आध्यात्मिक प्यास। ऐसे लग रहा था - उधर कोर्स क्या हो रहा है और इधर प्यास बुझ रही है। जैसे कोई अमृत पिला रहा है। जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को मिल जाये तरूवर की छाया, वैसा ही सुख मेरे मन को मिला है, जब से मैं शरण तेरी आया।

2. पहली मुरली- दूसरा, सबसे पहली मुरली याद करना है। पहला दिन याद आ रहा है क्या? पहली बार जब मुरली सुनने गये थे या पहली बार जब मुरली सुनी थी या वो पहला दिन सेन्टर पर गये और बैठकर मुरली सुन रहे थे। कोर्स पूरा हुआ और अच्छी-अच्छी बातें सुनाई दे रही है। बहन जी बैठी हुई है और मुरली सुना रही है, कुछ समझ आ रहा है, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। पर जो भी है लग रहा है, अच्छा बहुत है ये, बहुत बढ़िया है जो चल रहा है। बहुत बहुत अच्छा लग रहा है। वो पहला दिन जिस दिन हमने मुरली सुनी थी। वो शब्द अजीब से थे, वो वाक्य अजीब से थे। किस तरह की निराकश भावनायें। आज की मुरली में है कभी कभी अचानक अनायास ही किसी का भाग्य खुल जाता है। अचानक ही निमित्त बन पड़ते, अचानक ही भाग्य। जा कहीं और रहे थे। एक भाई का अनुभव है, ब्रह्माकुमारी सेन्टर कैसा पहुंचा? डस्टबिन का सामान फेंक रहा था, उसमें वो कोर्स की किताब ही मिल गई उसको, फटी पुरानी। वो किताब पढी और वो देखते-देखते सेन्टर पहुंच गया, हमारे रामदयाल भाई, अभी नहीं है साकार में। तो पहली पहली मुरली, फर्स्ट मुरली, फर्स्ट कोंटेक्ट, फर्स्ट सेन्टर, फर्स्ट मीटिंग विथ ब्राह्मण परिवार | फर्स्ट कोर्स, फर्स्ट मुरली और उसके बाद फिर पता चला तो फर्स्ट अमृतवेला। पहली बार आंख खुली। आज तक तो सूरज देखा ही नहीं था कभी। सात,

आठ, नौ बजे उठने का टाइम था। सुबह सुबह का सूरज, सूर्योदय कभी देखा ही नहीं था। अब पता चला, सूर्योदय भी होता है! वो दिन याद करना है, याद आ रहा है? तो पहला अमृतवेला। फर्स्ट अमृतवेला और उठकर क्या हुआ था? पहला भगवान के प्यार का अनुभव। पहला अनुभव प्रभु प्रेम का। ऐसा अनुभव आज तक कभी हुआ नहीं था। याद करने की कोशिश करना है कि सेन्टर गये, कोर्स हुआ, मुरली सुनी। मुरली में अमृतवेले की बात आयी, आज की मुरली में है- रात को जागो, रात का अभ्यास दिन में काम आयेगा। ऐसी बात सुनी पहले दिन मुरली में, एकदम तीर की तरह चुभ गई कि रात का अभ्यास दिन में काम आयेगा? आज ही उठेंगे। पहला ही दिन पता किया कितने बजे अमृतवेला होता है। फिर पता चला अच्छा ऐसा है। फिर उठे। *है नयी सी सुबह, नया-नया होता है तो उड़ते रहें, या फिर धीरे चलें थामे मुझको कोई, है नयी जमीन नयी आसमां, हुई हुई शुरू कहानी नई, तेरी आंखों ने कह डाले राज सभी,* सब नया है अभी। अभी सतयुग चालू है ब्राह्मण जीवन का। अभी ब्राह्मण जीवन का सतयुग चल रहा है, अभी से रावण को नहीं लाओ। अभी तो आत्मा उड़ रही है, आत्मा नाच रही हैं। *सर्दियों में धूप सी ही बातें तेरी, बातें फिर यादों में कटती रातें मेरी। खिल सी खिल सी गई है हर सुबह मेरी,* सुबह सुबह आत्मा खिल चुकी है। *घुलती घुलती जैसे **मिसरी की डली।*** आत्मा में मीठा-मीठा अनुभव हो रहा हैं। नींद ही उड़ गई है, नींद फिट गई है। दिन- रात याद। दिन रात प्रभु प्रेम के आंसू।

3. तीसरा पहला बाबा का गीत - जो सुना था। कमरे में गये, मुरली क्लास में गये और अचानक से गीत बज गया। और आंसू ही आ गये। कौन सा गीत था वो? हरेक का अपना-अपना था - भगवान हमारा साथी है, कहां मिलेगा तेरा प्यार, तेरा वो प्यार है बाबा जो समझाया नहीं जाता, बरस जाता है नयनों से वो बतलाया नहीं जाता, उपकार तुम्हारा ओ बाबा, झूम रहा झूम रहा मेरा मन मेरा मन वाह मेरा भाग्य मुझे मिले भगवन, हीरे जैसा मिला है जीवन मोती जैसा मन, ऊंचे है संकल्प जैसे ऊंचा हिमालय। तो ऐसे-ऐसे गीत सुने और क्या हो गया। पहला नशा, फर्स्ट सॉन्ग, फर्स्ट इनटोक्सिकेशन (intoxication)। कैसा नशा चढ गया था? सुखदेव भाई, कैसा नशा था? सुबह-सुबह या जब ज्ञान में आये थे तब, क्या कर दूँ और क्या नहीं। कहां है दीवार, पटक दूँ सर। क्या करूं? ऐसा नशा, ऐसी

खुमारी, ऐसा खुमार। भगवान के प्यार का नशा। वो शुरूआत के दिन, वो बचपन के दिन भुला न देना । ईश्वरीय बचपन, फर्स्ट स्पिरिचुयल इन्फ़न्सी (infancy)। भुला न देना। *बीत चली दुःख भरी रात, स्वर्णिम प्रभात मैं लाया हूं, ताज, तख्त और तिलक साथ, सौगात में लेकर आया हूं,* नशे वाले गीत! शिवबाबा तेरी यादों में हम ऐसे खो गये। तो पहला गीत।

4 . चौथा सबसे पहली सेवा करना – सबसे पहली कौन सी सेवा दी गई थी? बहन जी ने कहा - मैं कहीं जा रही हूं, इसको कोर्स करा देना, इसको थोड़ा समझा देना। तुम सेन्टर संभाल लोगे? हमने कहा – हाँ, हम संभाल लेंगे। हमें याद है जब हम पहली बार आये थे तो कुछ भी पता नहीं था यहाँ का। और बहन जी ने कहा था - हम लोग देहली प्रोग्राम में जा रहे हैं, तो तुम पार्टी को ले जाओगे? हमनें कहा – हाँ, ले जायेंगे। उनको लगा हम बड़े पुराने कुमार है। फर्स्ट डे, फर्स्ट अनुभव। कुछ भी पता नहीं, साठ लोगों की पार्टी। सब बूढे थे उसमें, 60 वर्ष के ऊपर थे। और सबकी बैग! एक एक की 6-6 बैग, और एक भी कुमार नहीं था। तो बहन जी ने कहा - इन सबको लेके जाना। हमने तो हाँ कर दिया। पर ये नही पता था सबकी बैग भी उठानी पड़ेगी। वो जो बस आती हैं, स्टेशन जाने के लिये वो ऊपर करो और ऊपर से नीचे करो। तो पहली पहली सेवा।

5 पांचवा. पहली प्रदर्शनी – या देखी या समझाई या पहला पब्लिक प्रोग्राम जिसके लिये अथक होकर हमनें सेवा की थी। भाग रहे थे, सुबह से लेकर रात तक, दौड़ रहे थे, ये लाऊँ वो लाऊँ, ये करूँ वो करूँ, जैसे सब कुछ ही मैं ही करूँ, और किसी को यह सेवा नहीं दी जाये, सब कुछ मुझे ही दिया जाये। ये भी मैं देखूंगा, वो भी देखूंगा, वो भी देखूंगा सब कुछ मैं ही देखूंगा और, किसी और को दिया तो दुःख होता है। हमारा भाग्य कम हो रहा है, बंट रहा है। उसको क्यूं दिया गया? मुझे ही सबकुछ चाहिए।

6 छठवां. सबसे पहले मधुबन में आना – फर्स्ट मधुबन की ट्रिप। उसको याद करना है। सबसे पहली बार मधुबन आ रहे थे, ट्रेन में आ रहे थे, अभी ट्रेन वहाँ पहुंची थी, अमीरगढ़, मावल और लोगों

ने कहा, बस अभी नेक्सट स्टेशन आबू रोड है। तब क्या हो रहा था? खिड़की से देख रहे थे क्या होता है, क्या है जिसके बारे में इतना सुना है, जिसके बारे में कब से सुन रखा है मधुबन, मधुबन, मधुबन। सेन्टर पर जाते तो मधुबन, मधुबन, मधुबन। दिन रात मधुबन। मम्मी कह रही हैं, वहाँ जाकर बैठ जाओ, बहन जी कह रही है, बैठो अंदर। कहते है नहीं, हम ट्रेन की खिड़की, दरवाजे पर खड़े है, पकड़ के। क्योंकि अब आबू आने वाला है झाड़ दिख रहे हैं, पहाड़ दिखाई दे रहे हैं, ऊपर से दिखाई दे रहा है ओम शांति, वो पहाड़ों पर लिखा हुआ। अनुभव, निर्याकश चेतना हैं, छोटा बालक है अभी। हरिवंशराय बच्चन की एक कविता है - ये नन्हा सा शिशु। ये नन्हा सा शिशु ये नहीं जानता इसके जीवन की यात्रा कैसी होगी? *ये नन्हा सा शिशु इसके चेहरे पर ऐसी ही निर्विकारिता, जो बुद्ध ने कभी अपने जीवन की साधना के बाद पाई थी, ये नन्हा सा शिशु इसे कुछ लेना देना नहीं है। उसे उस ग्वाले से भी क्या लेना देना, जिसने आज ही दूध कम तौला था। ये नन्हा सा शिशु, इसे नहीं पता इसके जीवन की यात्रा समतल होगी या ऊबड़-खाबड? ये नन्हा सा शिशु निर्याकिश चेतना है, सबकुछ इनोसेंट है।*

7. सातवां मधुबन की यात्रा – वो चार धाम, पहले चार धाम की यात्रा। वो पहला बाबा मिलन। सबसे पहली बार आये थे और बाबा से मिले थे। सेन्टर पर पहली-पहली टोली, सबसे पहला-पहला ब्रह्मा भोजन याद है किसी को? अपना पहला ब्रह्मा भोजन। गुलाब जामुन। क्या था? पूरी और चना। पहला पहला अपने जीवन का, सबसे पहले सेन्टर पर ब्रह्माभोजन। पहली टोली, तब पता चला, हमनें पूछा ये टोली मतलब क्या होता है? सबसे पहला ब्रह्माभोजन, सबसे पहली टोली। यादों की गलियों में फिर से खो जाना है। इंग्लिश में कहते - वॉक डाउन द मेमोरी लेन (walk down the memory lane), फिर से जाना है, आज से चालू करना है। कल तक बार-बार याद करना है पुरानी यादें, पुरानी बातें, वो अनुभव। अभी ब्राह्मण जीवन में कडवाहट आयी नहीं है। अभी सतयुग और त्रेता चालू है। अभी रावण की प्रवेशता हुई ही नहीं है।

8. आठवां पहली मधुबन की सेवा- पहली बार मधुबन में सेवाधारी बनकर के आये। मधुबन निवासीयों से मुलाकात, पहला मधुबन में सेवाधारी बनकर आये थे, अथक सेवाधारी थे। कितना भी सेवा करो, काम दो, थकते नहीं थे बिल्कुल। जिन्न की तरह हम सेवा करते थे। वो पहला-पहला वैराग्य। आज की मुरली में है - मुर्दो को क्या याद करना, शमशान को क्या याद करना? बापदादा कन्याओं से क्या कहते हैं? शादी नहीं करो, बर्बादी है। गटर में क्यों जाती हो? बाप का नहीं मानेगी? ईमोशनल ब्लॅकमेल (emotional blackmail). पहला-पहला वैराग्य, नहीं चाहिए कुछ भी इधर का, ये दुनिया विनाश होने वाली है। क्या करूं और क्या नहीं करूं? कुछ नहीं चाहिए दुनिया का। आज की मुरली में है - मर गये जैसे। पहला-पहला वैराग्य, वो पहली-पहली धारणा, वो पहला-पहला त्याग। वो सबसे पहला-पहला ब्रह्मचर्य की समझ । वो पहली पहली प्रतिज्ञायें, कौन-कौन सी प्रतिज्ञा की थी? क्या कर देंगे? बाबा क्या कर दूंगा? जो भी रास्ते में आये, हटा दूंगा उसको। और क्या कर दूंगा? कन्याओं ने क्या प्रतिज्ञायें की थी? योगी बनने की, योगिनी बनने की प्रतिज्ञा। और आज की मरली में बाबा ने योगी एक नये अर्थों में बताया है। वो जिसकी शादी होने वाली है, वो भी योगी है। योगी अर्थात् जिसका जिससे योग लगा है। इस अर्थ में भोगी भी योगी है, क्योंकि उसका योग भोग से लगा हुआ है। आज कहा न उसको योगी कहा जाता है जिसकी सगाई हो गई है। और, क्या थी प्रतिज्ञा? पहली पहली प्रतिज्ञा? बाहर का नहीं खायेंगे, आज से पूरा बाहर का बंद । आज से किसी पार्टी में नहीं जायेंगे, किसी के साथ। पुराने सारे दोस्त खत्म, पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। और क्या प्रतिज्ञायें थी पहली पहली? एक बाप, बस। तुम्हीं हो सब कुछ, तुम्हारे सिवाए कुछ है ही नहीं दूसरा। दुनिया मर चुकी है और क्या प्रतिज्ञाएं थी? ये जीवन भगवान को दे दिया है। सब ये गुटखा, पान, तंबाकु, सब कुछ खलास, सब कुछ दूर। आज से केवल भगवान के लिये चित्र निकालेंगे और किसी के लिये नहीं। तो पहली पहली प्रतिज्ञाएं। सबसे पहले उत्पन्न हुआ वो आश्चर्य, वो वण्डर। उत्कण्ठा, ज्ञान को जानने की पिपासा, ज्ञान को समझने की अभीप्सा, योग की गहराई का पहला अनुभव।

9. नौंवा पहली बाबा की मदद – जो मिली थी। सबसे पहले पहले बाबा की छत्रछाया का अनुभव। सबसे पहले पहले जब संसार एक तरफ हो गया और सबसे पहला पहला वो विरोध दुनिया का, जब

विद्रोही आत्मा थी। माँ ने कहा था मर जाउंगी, हमनें कहा था मर जा। माँ के हाथ का ही खाना बंद । दोस्तों से वैराग्य, दुनिया से वैराग्य, घनघोर वैराग्य और उस समय भगवान की मदद । ब्राह्मण परिवार का प्यार, बहनों का प्यार, वो सब कुछ।

10. दसवां पहला माया से सामना – पहला पहला माया का वार। पहली बार माया से हार। अब तक तो हार का नाम ही नहीं था। पता चला ये माया भी आती है क्या? माया का तो पता ही नहीं था, क्या है? खाली सुना था मुरलियों में। पर ऐसे आती भी है, ये तो पता ही नहीं था, ऐसा लगता था पता नहीं किसके लिये ये बाबा कहते? ये माया, देहभान । हमको तो है ही नहीं कुछ। काम महाशत्रु है, ये तो हमको पता ही नहीं क्या है? यहाँ पता चला। फिर धीरे धीरे पहली पहली माया से मुलाकात। पहली पहली माया से मुलाकात। ऐसा मुरली में कभी नहीं आया न। स्टूडेंट्स से मुलाकात, दादियों से मुलाकात, टीचर्स से मुलाकात, सेवाधारियों से मुलाकात। ये बच्चों की मुरली में आयेगा, हमारी जो मुरली हैं न, उसमें आयेगा माया से मुलाकात, माया से रूहरिहान और वो पहली -पहली हार। पहली हार हो गई, पहली पहली निराशा, पहली पहली उदासी, पहला पहला दुःख इस ब्राह्मण जीवन में, लम्बा समय ब्राह्मण जीवन में चलने के बाद आये हुये पेपर्स । जो पहले पेपर थे, एकदम वो पेपर थे ही नहीं, खेल था वो तो, एकदम क्रॉस कर लिया उसको तो, उसको तो बिल्कुल देखा ही नहीं। वो सारे पेपर एकदम क्रॉस कर लिये एकदम शुरूआत में। फिर एकदम अचल अडोल चलते रहे। लम्बे समय तक। 10 साल, 20 साल, 30 साल और अभी अचानक से नया आक्रमण हुआ है माया का। ये क्या है? हमको तो पता ही नहीं था माया क्या है? वो पहली हार। पहला मन उदास, दिलशिकस्त।

11. ग्यारहवां माया से पहली जीत- क्या खुशी थी उस जीत की? माया ने आक्रमण किया, हरा दिया। पर फिर अगली बार जीत। लक्ष्मण पहले हार गया, क्योंकि थोड़ा अहंकार था शायद अंदर। इसलिए हार गया था, पर जब संजीवनी बूटी आई, मूर्छा से बाहर निकला तब आत्म निरीक्षण किया होगा। सेल्फ चेकिंग, अमृतवेला कि कुछ गड़बड़ की है थोडी। इसके बाद फिर से मेघनाथ को चुनौती दी और फिर मेघनाथ को हराया। क्योंकि वो भी निद्राजीत था, ये भी निद्राजीत था। दोनों

निद्राजीत माया भी निद्राजीत है तुम भी निद्राजीत हो। माया तो कभी नहीं सोती है। तो वो पहली पहली जीत, उसको भी याद करना है। और कैसे जीते थे, उसको भी याद करना है।

12. बारहवां पहला कटु अनुभव इस परिवार से – पहली पहली डांट, पहला पहला धोखा, पहला पहला भ्रम, और पहली पहली नाराजगी। उस डांट ने ही पुरूषार्थ बढ़ा दिया था। वो एक वाक्य किसी का और वो पहला पहला भोग विलास में डूब जाना। भूल ही गये पुरूषार्थ और ब्रह्माभोजन। और घूमना फिरना, खान पान और डिजीटल वर्ल्ड - इसमें ही खो गये। और एक दिन अचानक कोई आ गया। उसने कहा जागो, उठो, तुम आये किस लिये थे? कर क्या रहे हो? और अचानक से चेतना जाग गई। अचानक से मेक्सिमाइज़ (maximize) हो गया पुरूषार्थ। अचानक से संयम आ गया, अचानक से ब्राह्मण जीवन का अर्थ क्या है समझने लगा। और फिर पहला पहला वो पुरूषार्थ, तीव्र पुरूषार्थ, पहला-पहला वो शक्तिशाली अमृतवेला, शक्तिशाली मुरली और पहला पहला वो मुरली का चिंतन, वो एकांत, वो मौन, वो प्रकृति का सानिध्य वो, पहली-पहली अशरीरी अवस्था, बहुत पॉवरफुल। अनुभव करने है, याद करने का। अपने सारे ब्राह्मण जीवन को देखना हैं, जब से ब्राह्मण जीवन चालू किया। यहाँ हम ब्राह्मण थे, यहाँ जन्म लिया, अब यहाँ से यहाँ तक कौन-कौन सी यात्रायें की है? कम से कम 7-8 यात्रायें हरेक ने की है।

1. ज्ञान की यात्रा- ज्ञान कितना समझा? जब आये थे, तब कितना समझा था? अब कितना समझा है?

2. योग की यात्रा - हरेक को अपनी योग की यात्रा देखना है। जब आये थे ज्ञान में, तब योग कैसा था? और अब योग कितना समझा है?

3. सेवाओं की यात्रा – कितने निर्विघ्न रहे सेवाओं में?

4. शरीर की यात्रा- कौन-कौन सी बीमारियां आयी? कब-कब एडमिट थे? कितनी-कितनी दवाइयाँ खानी पड़ी? और कैसे-कैसे बाबा ने मदद की? कैसे शारीरिक दर्द में याद किया? शरीर की यात्रा।

5. समर्पित जीवन की यात्रा- सेवाकेन्द्र पर रहने वाले, मधुबन निवासी। एक तो सेवा निर्विघ्न।

6. स्किल्स (skills) की यात्रा- कौन कौन से हुन्नर? जब आये थे कुछ भी पता नहीं था, कुछ भी सीखे हुए नहीं थे। यहां सीखा सब कुछ। कैसे सीखते गये, आगे बढते गये। वो हुनर की एक यात्रा है।

7. ब्रह्मचर्य की यात्रा – जब से ब्राह्मण जीवन लिया, तब से अब तक का ब्रह्मचर्य कितना खण्डित हुआ? कितनी बार गिरे नीचे और कितनी बार उठे?

8. वैराग्य की यात्रा- कितनी बार एकदम वैराग्य आया? और एक दम खत्म हो गया बीच में। पूरा संसारी हो गये, संसार में ही डूब गये।

9. भोजन की यात्रा – शुरूआत से अब तक। सुखद ही सुखद। कितना संयम रहा? भोजन में कितना संयम रहा? भोजन बढता गया या कम होता गया? योगी अर्थात् धीरे धीरे अल्पाहारी होते जाता है। एक होता है फिजिकल फूड (physical food), एक होता है सूक्ष्म फूड। योगी का भोजन रिप्लेस हो जाता है। फिजिकल फूड से जो ऊर्जा उसको प्राप्त होती है, वही ऊर्जा उसे कुछ और सोर्सिस (sourses) से प्राप्त होने लगती है। तो अपने आप। ऐसा नहीं कि उसने भूख को दबा दिया। उसकी भूख ही खत्म हो जाती है, धीरे-धीरे। क्यूँकि जो कुछ वहां मिल रहा था, वो अब यहां मिल रहा है। क्योंकि भूख का संबंध मेंटल और ईमोशनल से है, भूख का संबंध पेट से नहीं है। भूख आदत है। भूख की यात्रा, भोजन की यात्रा, हंगर की यात्रा। हजारों यात्रायें है। हरेक अपनी अपनी यात्रा अगले दो दिन आज से कल तक चेक करे। हमने कौन-कौन सी यात्रायें पार की है? गृहस्थी जीवन की यात्रा, वैवाहिक जीवन की यात्रा। कुमार है उनको ये सब में जाने की जरूरत नहीं, पर कुमारों की अपनी गृहस्थी है। कुमारों ने और कुमारियों ने अपनी गृहस्थी खड़ी कर रखी है। वो गृहस्थी की भी यात्रा देख सकते है।

10. डिजीटल यात्रा- पहले थे, हम मोबाइल आये तो भी हम मोबाइल यूज नहीं करेंगे। ऐसा वैराग्य था। जो ऐसा कहते थे, आज उनके पास तीन-तीन मोबाइल है। जो कहते थे, ये नेट वेट, ये सब माया है। आज तो फ्री में आ गया, तो सब उसमें लगे हुए है, सेवा। किन्होंने ऐसी भयंकर, महा भयंकर प्रतिज्ञायें की थी। वो खुद याद नहीं करना चाहते, अपनी प्रतिज्ञाओं को। न ही उन लोगों को मिलना चाहते, जिनके आगे वो की थी। तो डिजीटल यात्रा देखनी है अपने जीवन की। डिजीटल यात्रा कैसे

की और अब कहाँ पहुंचे?

11.जॉब की यात्रा- बहुत लोग जॉब करते। बिजनेस की यात्रा जो बिजनेस में है, वो बिजनेस की यात्रा देखें। परिवार में बच्चे। वो कैसे थे, पहले ज्ञान में चलते थे, फिर ज्ञान छोड़ दिया। या पहले ज्ञान में नहीं थे, अभी ज्ञान में है। छोटे-छोटे बच्चे हमने देखे है, संदली पर बैठकर जो मुरली सुनाते थे। छोटे-छोटे बच्चे ओम शांति भवन में, दादियों की गोद में जिनका जीवन बीता। छोटे-छोटे बच्चे, जो कि इतना नशा रहता था उनको, बाप रे। हमें याद है, एक छोटा सा कुमार था, जो हमारे लिये टिफिन लाता था। इतना छोटा, अभी पता चला उसकी शादी हो गई। मैं बोला, अरे! वो इतना छोटा! आश्चर्य हो गया हमको, धक्का लगा एकदम। क्या नशा था उसको। इतना छोटा, बडे-बडे डॉक्टरों को कोर्स कराता था, ज्ञान सुनाता था, लोग आश्चर्य से सुनते थे। अरे बाप रे! आज वो है ही नहीं। जो इतने छोटे है, ओम शांति, तुम्हारा नाम क्या है? आत्मा। तुम्हारे पिता कौन हैं? परमात्मा। कहां रहते हैं? परमधाम । ऐसे ऐसे बोलने वाली। छोटी छोटी तोतली भाषा में बोलने वाली कन्यायें, बच्ची आज हैं ही नहीं। उनकी भी यात्रा है। उस यात्रा को भी देखना है।

तो कुछ कडवे अनुभव है, कुछ मीठे, पर **मीठे अनुभवों को ज्यादा याद करना है। मिसरी की डली है सारे। कडवे से सीखना है, माया से सीखना।** जब जब माया ने हराया, उस माया से सीखना और आगे बढना है। माया आयी थी, सिखाने के लिये। जब-जब गिरे, वो कुछ तो पाठ पढाकर गयी ना। ऐसे तो नहीं आयी।

ओम शांति।